A Comparative Study of B.Ed. Scholars towards their Attitude for Environmental Pollution

(In the context of Distt Balia, Uttar Pradesh)

पर्यावरण प्रदूषण के प्रति बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन (उत्तर प्रदेष राज्य के बलिया जिले के सन्दर्भ में)

*** Ajeet Kumar Dubey**
Ph.D. Scholar
SSSUTMS,Sehore

*** * Dr. Dhiraj Shinde**
HOD (Education)
SSSUTMS, Sehore

*** * * Dr. Rishikesh Yadav**
Asst. Professor,
SSSUTMS, Sehore

1. प्रस्तावना

पर्यावरण एंव मानव दोनो एक दूसरे के लिए महत्वपूर्ण घटक है, अर्थात मानव इस प्रथ्वी की सर्वोत्तम जाति है, किन्तु मानव के द्वारा किए गए पर्यावरण के अत्यधिक दोहन से वातावरण का संतुलन बिगड़ता चला गया। जिसे हम प्रदुषण के नाम से जानते है। इसमें कोई दो राय नही है कि आज जनसंख्या विस्फोट के कारण मानव पूर्णतः संकट में है। आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या गम्भीर रूप धारण कर रही है। पर्यावरण के विभिन्न घटकों को अपनी विषिष्ट संरचना होती है, जैव मण्डल तभी तक अस्तित्व में है जब तक इन घटकों की गुणवत्ता तथा मात्रा संतुलित बनी रहे। प्रकृति एक नियमित क्रम से चलती है। छेड़छाड़ करने पर यह निरंतरता अस्त–व्यस्त हो जाती है। वर्तमान में प्रकृति के साथ कुछ ऐसा ही हो रहा है। प्रकृति ने हमें प्राकृतिक संसाधन जैसे वायु, जल, भूमि एवं खनिज पदार्थ आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराये है, परन्तु जनसंख्या वृद्धि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक षोषण एवं औद्योगिक विकास योजनाओं के कार्यान्वयन में पर्यावरण की उपेक्षा आदि कार्यो से पर्यावरण के घटकों में कई प्रतिकूल परिवर्तन आये है, यह अवांछित परिवर्तन ही पर्यावरण प्रदूषण कहलाते है। षिक्षण अधिगम में अध्यापक षिक्षा का एक महत्वपूर्ण स्थान होता क्योंकि वह पूरी षिक्षा

प्रक्रिया का क्रियान्वयन करता है। अतः अध्यापक षिक्षा के सेवारत षिक्षको का प्रषिक्षण तथा इससे पूर्व इसका ज्ञान आवष्यक है। षिक्षण अधिगम में अन्य विषयों की विभिन्न विधियों, प्रविधियों, युक्तियों तथा आयामों के प्रयोग की भांति ही पर्यावरण षिक्षा में भी इनका प्रयोग किया जाना होता है। वर्तमान में विद्यालयीन स्तर पर पर्यावरण षिक्षा सेवा पूर्व एवं सेवारत अध्यापकों की दृष्टि से और भी महत्वपूर्ण हो गयी है। जिससे षिक्षक प्रषिक्षण संस्थानों की भूमिका को नये परिप्रेक्ष्य में समझना जरूरी हो गया। इन संस्थानों का दायित्व बनता है कि वे नवीन षिक्षकों को तैयार करे तथा उनमें पर्यावरण के बारे में ज्ञान, कौषल, मूल्य तथा लगाव उत्पन्न करे, जिससे वे अपनी षिक्षण प्रविधियों में सुधार लाये और पर्यावरण के संसाधनों का अधिक से अधिक प्रयोग करने की क्षमता विकसित करे। एन.सी.ई.आर.टी. के द्वारा पर्यावरण षिक्षा के प्रचार एवं प्रसार हेतु सेवा पूर्व एवं सेवारत षिक्षकों के प्रषिक्षण की व्यवस्था की गयी। पर्यावरण षिक्षा की प्रवृत्ति अन्तःअनुषासनात्मक होने के कारण प्रषिक्षण के स्वरूप में कुछ परिवर्तन करने की आवष्यकता प्रतीत होती नजर आती है। इसी प्रकार राष्ट्रीय षिक्षा अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिषद्, राज्य षिक्षा अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिषद निदेषालय तथा उच्च षिक्षा विभाग भी षिक्षक प्रषिक्षण पाठ्यक्रम में पर्यावरणीय भाग को विकसित करने हेतु प्रयासरत है।

2. शोध के उद्देश्य

कोई भी शोध कार्य निश्चित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर ही प्रारम्भ किया जाता है क्योंकि उद्देश्यों के अभाव में कोई भी अध्ययन या कार्य सार्थक नहीं हो सकता है। उद्देश्यों का निर्धारण एक ऐसे पथ का निर्माण करता है जिस पर चलकर सम्पूर्ण शोध की प्रक्रिया संचालित एवं सम्पादित की जाती है। उद्देश्यों का निर्धारण भटकाव की स्थिति को

रोकता है। प्रस्तुत शोधकार्य निम्न उद्देष्य के आधार पर संपादित किया गया है –

1. बलिया जिले में स्थित षासकीय षिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. बलिया जिले में स्थित षासकीय षिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

3. षोध परिकल्पना

परिकल्पना मूलतः एक प्रकार की अनुमानपरक मानसिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शोध समस्या का अस्थायी एवं सत्याभाषी समाधान प्रस्तुत किया जाता है। परिकल्पना के द्वारा दो या दो से अधिक चरों के मध्य सम्बन्ध निरूपित किया जाता है। परिकल्पना को शोध का केन्द्र बिन्दु माना जाता है जिसके परितः सम्पूर्ण शोध प्रक्रिया केन्द्रित होती है। प्रस्तुत षोध में निम्न षून्य परिकल्पना को समेषित किया गया है –

1. बलिया जिले में स्थित षासकीय षिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. शोध समस्या का परिसीमायें

षोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत षोधकार्य हेतु निम्न परिसीमायें परिसीमित की गयी है –

1. प्रस्तुत षोधकार्य उत्तर प्रदेष राज्य के बलिया जिले से सम्बन्धित है।
2. प्रस्तुत षोधकार्य हेतु बलिया जिले में संचालित षासकीय षिक्षक प्रषिक्षण संस्था में अध्ययनरत 100 प्रषिक्षणार्थियों, क्रमषः 50 छात्र प्रषिक्षणार्थियों एवं 50 छात्रा प्रषिक्षणार्थियों का चयन किया गया है। चयनित षासकीय एवं अषासकीय षिक्षक प्रषिक्षण संस्थान से प्रषिक्षार्थियों का चयन यादृच्छिक पद्धति किया गया है।

6. षोध प्रविध

प्रस्तुत षोध वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत आता है, जिसमें षोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

7. जनसंख्या एवं न्यादर्ष

इकाइयों के समूचे समूह को जिसके लिए चर का मान निकालना अभीश्ट है जनसंख्या कहते हैं। जनसंख्या का अर्थ अध्ययन की सम्पूर्ण इकाइयों के समूह के रूप में लिया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन की समस्या के अनुरूप बलिया जिले में संचालित षिक्षक प्रषिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों को षोध समष्टि के रूप में चुना है। जब किसी जनसंख्या में से किसी चरका विषिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछ इकाइयों का चयन कर लिया जाता है तो इसे न्यादर्ष कहते हैं तथा इन इकाइयों को चयन करने की प्रक्रिया को न्यादर्षन कहते हैं। प्रस्तुत षोध कार्य हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्ष प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया है। जिसके अन्तर्गत बलिया जिले में संचालित षासकीय षिक्षक प्रषिक्षण संस्थान में प्रषिक्षण प्राप्त कर रहे 50 छात्र प्रषिक्षणार्थी एवं 50 छात्रा प्रषिक्षणार्थियों का चयन किया गया।

8. प्रदत्तों का संकलन एवं सांख्यिकीय विधि

षोधार्थी द्वारा चयनित न्यादषी से व्यक्तिगत रूप से मिलकर प्रदत्तों का संकलन किया गया तथा संकलित प्रदत्तों के तार्किक विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विधियों के अन्तर्गत मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात परीक्षण एवं प्रतिशत का प्रयोग किया गया है।

सारणी संख्या–1

षासकीय षिक्षक प्रषिक्षण संस्था में अध्ययनरत छात्रा प्रषिक्षणार्थियों एवं छात्रा प्रषिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विष्लेषण

क्र	विवरण	ड$_1$	ड$_2$	ै$_1$	ै$_2$	क	σक	ब्र
1.	पर्यावरण जागरूकता के प्रति व्यक्तिगत अभिवृत्ति	2.60	2.71	0.75	0.71	0.11	0.08	1. 37
2.	पर्यावरण जागरूकता के प्रति परम्परागत अभिवृत्ति	2.65	2.72	0.87	0.82	0.07	0.09	0. 77
3.	पर्यावरण जागरूकता के प्रति सामाजिक अभिवृत्ति	2.40	2.50	0.69	0.65	0.10	0.07	1. 42
4.	पर्यावरण षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति	2.41	2.48	0.66	0.65	0.07	0.07	1. 00
5.	पर्यावरणीय सामाजिक समायोजन अभिवृत्ति	2.82	2.93	0.77	0.80	0.11	0.09	1. 22

कि त्र छ$_1$छ$_2$.2त्र298

9. षोध परिणाम

सारणी संख्या–1 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि षासकीय षिक्षक प्रषिक्षण संस्था में अध्ययनरत छात्र प्रषिक्षणार्थियों के पर्यावरण के प्रति रूचि का मध्यमान, छात्रा प्रषिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति रूचि के मध्यमान से अधिक है। अतएव परिकल्पना – बलिया जिले में स्थित षासकीय षिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को अस्वीकृत किया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्निहोत्री, रविन्द्र , "भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ," दिल्लीः रिसर्च पब्लिकेशन्स इन सोशल साइन्सेस, 1956
2. वेस्ट, जॉन, डब्ल्यू, "रिसर्च इन एजूकेशन", न्यू देहलीः प्रिटिंग हाल ऑफ इण्डिया प्रा0लि0, 1977.
3. भट्ट, डॉ. पुरूषोत्तम , "पर्यावरण चेतना", भोपाल, मध्य प्रदेष हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2004.
4. गुप्ता, अलका, "पर्यावरण शिक्षा का विकास तथा समस्याएँ", इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, 2003.

5. गुप्ता, एस. पी, "सांख्यिकीय विधियाँ, विकास एवं समस्याएँ", इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, 2004
6. जोषी, डॉ. रतन, "पर्यावरण अध्ययन", साहित्य भवन पब्लिकेषन, आगरा,, 2007.
7. राय, डॉ. ए.एन, "इनविरोनमेन्टल एजुकेषन,", गोयल ब्रदर्स प्रकाषन, नई दिल्ली,, 2007.
8. सिंघल, " भारतीय पर्यावरण शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ, ", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,, जयपुर 1999.